प्रश्न :- आदिकाल के प्रमुख सिद्ध साहित्य पर प्रकाश डालें।

उत्तर :- भारतीय धर्म-साधना में सिद्धों का प्रादुर्भाव 8वीं शती के आस-पास माना जाता है। सिद्ध सम्प्रदाय वस्तुतः बौद्ध धर्म की विकृति ही है। ईसा की प्रथम शताब्दी तक आते-आते बौद्ध धर्म हीनयान और महायान नामक दो शाखाओं में विभक्त हो गया। हीनयान में सिद्धान्त पक्ष की प्रधानता थी, जबकि महायान में व्यावहारिकता पर बल दिया जाता था। हीनयान केवल विरक्तों और संन्यासियों को आश्रय देता था, जबकि महायान के द्वार सबके लिए खुले थे। ऊँच-नीच, छोटे-बड़े, गृहस्थ-संन्यासी सबको निर्वाण तक पहुँचाने का दावा महायान शाखा का था।

बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार भारत से बाहर भी पर्याप्त हुआ। तिब्बत और नेपाल में यह धर्म शैव मत से प्रभावित हुआ और जन-सामान्य को आकर्षित करने के लिए इसमें तंत्र-मंत्र, अभिचार का समावेश हो गया। तंत्र का समावेश हो जाने से इस धर्म की मूल दिशा में परिवर्तन हो गया और अब इसमें त्याग, तपस्या और संयम का स्थान भोग-विलास ने ले लिया। साधक मंत्र जप की ओर उन्मुख हो गये और इस प्रकार महायान मंत्रयान बन गया। आगे चलकर इस मंत्रयान के दो भाग हुए – वज्रयान और सहजयान। इन वज्रयानियों को ही सिद्ध कहा जाता था, ये मंत्र-जप से सिद्धि की आकांक्षा करते थे। सिद्धों की संख्या 84 मानी जाती है तथा इनका समय 797 ई० से 1257 ई० तक है। ये सिद्ध अपने नाम के पीछे 'पा' जोड़ते थे, जैसे – लुईपा, सरहपा, शबरपा, कण्हपा, डोम्भिपा, कंकालिपा आदि। सिद्ध प्रायः अशिक्षित एवं तीन जातियों में से थे। इन्होंने स्त्री सेवन को अपनी साधना का अंग बना लिया और इस प्रकार धर्म तथा अध्यात्म की आड़ में नारी का भोग

किया।

सिद्ध साहित्य अद्धमागधी अपभ्रंश भाषा में लिखा गया है, जिसे कुछ विद्वानों ने संध्या-भाषा कहा है, क्योंकि भाषा का यह रूप हिन्दी और अपभ्रंश का मिला-जुला रूप है। सिद्धों ने जो रचनाएँ की हैं वे मुख्य रूप से तीन प्रकार की हैं - नीतिवादी रचनाएँ, उपदेशात्मक रचनाएँ और साधना सम्बन्धी रहस्य रचनाएँ। रस की दृष्टि से सिद्ध साहित्य में शांत और श्रृंगार रस की प्रधानता रही है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न:- सिद्ध साहित्य पर एक संक्षिप्त नोट लिखें?

पता:-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
मो०न०- 7909046087
दिनांक-12.02.2022